Date - 08-05-2020

Dr. Sanchlata

Asst. Professor (Guest faculty)

Dept. of Philosophy

Women's college, Samastipur

Email Id. - Snehababli1987@gmail.com

Cont. no - 8409587640

Class - B.A. - I (Hons.)

Topic - Shankara's Concept of Brahman.

Scanned with CamScanner

ब्रह्म - सिद्धान्त

शंकराचार्य के अनुसार, पारमार्थिक दृष्टि से ब्रह्म की ही एकमात्र वास्तविक सत्ता है। नानात्मक विकारों का निषेध करने के पश्चात् जिस अविकारी, शाश्वत, नित्य तत्व की प्राप्ति होती है वही शंकर के अनुसार सत् या परमार्थ है, वही ब्रह्म है। वह ब्रह्म स्वतः सिद्ध तथा स्वयं प्रकाश्य है।

ब्रह्म के दो रूप हैं — सगुण ब्रह्म एवं निर्गुण ब्रह्म कहा जाता है। जब ब्रह्म माया की उपाधि से युक्त होता है तब वह सगुण ब्रह्म (ईश्वर) कहलाता है। निर्गुण ब्रह्म निर्विशेष, निरुपाधिक एवं निष्प्रपञ्चमय होता है। इस निर्गुण ब्रह्म का केवल निषेधमुख से ही वर्णन किया जा सकता है। निर्गुण ब्रह्म ही ब्रह्म की वास्तविक स्थिति है।

ब्रह्म के दो लक्षण हैं — (i) तटस्थ लक्षण।
(ii) स्वरूप लक्षण।

(i) तटस्थ लक्षण : यह किसी वस्तु के आगन्तुक धर्म को इंगित करता है। अपने तटस्थ लक्षण में ब्रह्म इस जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और संहार का कारण है। (जन्माद्यस्य यतः) जगत् का कारण होना ब्रह्म का औपाधिक गुण है।

(ii) स्वरूप लक्षण : स्वरूप लक्षण वस्तु के तात्विक स्वरूप को प्रकाशित करता है। अपने स्वरूप लक्षण में ब्रह्म को सत्य एवं अनन्त ज्ञान स्वरूप कहा जाता है। वह

Scanned with CamScanner

सत, चित और आनन्द से युक्त है। सत, चित, और आनन्द ब्रह्म के गुण न होकर ब्रह्म के स्वरूप हैं। पुनः ये तीन नहीं हैं, वस्तुतः तात्त्विक रूप से एक ही हैं जो सत है वही चित है, वही आनन्द है और वही ब्रह्म है।

शंकर ब्रह्म के लक्षण को स्पष्ट करने के लिए एक दृष्टान्त प्रस्तुत करते हैं। एक गड़रिया रंगमंच पर राजा का अभिनय करता है। यहाँ राजा के रूप में उसका दिखाई देना उसका तटस्थ लक्षण है। स्वरूप लक्षण की दृष्टि से वह गड़रिया है।

ब्रह्म- विचार सम्बन्धी अन्य पक्ष:

(i) ब्रह्म में किसी प्रकार का भेद नहीं है। भेद तीन प्रकार के हैं - सजातीय, विजातीय एवं स्वगत। ब्रह्म तीनों प्रकार के भेदों से रहित है।

(ii) शंकर का ब्रह्म व्यक्तित्वशून्य (Impersonal) है।

(iii) पारमार्थिक दृष्टि से ब्रह्म ही एकमात्र सत् है। ब्रह्म सत् होने के कारण नित्य, शाश्वत, अभूत स्वरूप, अविनाशी है।

(iv) जगत् ब्रह्म का विवर्त है, उसका परिणाम नहीं है। (ब्रह्म- विवर्तवाद)

(v) ब्रह्म ज्ञेय नहीं है। दूसरे शब्दों में ब्रह्म को ज्ञान का विषय बनाकर नहीं जाना जा सकता है। ज्ञाता स्वः का द्वंद विषय के स्तर पर उतरता है। ब्रह्म विषय स्वरूप नहीं है। परन्तु ब्रह्म अज्ञेय भी नहीं है। अनित्य स्वरूप है। उसे अपरोक्षानुभूति से ही जाना जा सकता है।

Scanned with CamScanner